

20<sup>4</sup>

कृषिदात्री प्रेम हरी कवील वा ही उपलक्ष  
नही खोया कवील वा ही के का के  
प्रवाप हिलाई जरी कोरी इस्मिन ही  
अल गदावा वांरी अरुण हल ही  
क अरुण पुरी मे खालि मिया जरा  
ही पत्रावली केसल अरुण अरुण अरुण  
जाल के काम हा वाद अरुण अरुण  
उरुण हिला अरुण अरुण अरुण

5000  
कमूद (अरुण) राजा